रात्रि क्लास 11/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

तुम बच्चों को बाप खुद कहते हैं बाहर में कितना गोरख धंधा आदि है। फील करते हैं ना। बहुत ही मित्र-संबंधी आदि मिलते हैं। बगुलों का संग हो जाता है। बाप को तो तुम बच्चों के सिवाय और कोई है नहीं। वह तो जैसे रावण सम्प्रदाय हैं। तो बाप दादा को भी कहाँ जाना अच्छा लगता नहीं है। बाप ने इशारा दिया है बाहर जाना ठीक नहीं है। इसलिए कहाँ भी जाने दिल नहीं होती है। है तो दोनों इकट्ठे। वह भी खुशी रहती है। बाबा तो कहते हैं ना तुम तो शिवबाबा की भाकी पहनते हो। मैं कैसे पहनूँ। पहले नम्बर का बच्चा हायर अपैअरेंट होता है। बाबा भी अपने को हायर अपैअरेंट समझता है। हम जाकर प्रिंस-प्रिंसेज़ बनेंगे। इसमें एक तो याद की यात्रा चाहिए और आप समान बनाना है। सर्विस तो बाबा से तुम जास्ती करते हो। तुमको लाने वाला बाबा। फिर इतने सभी को लाने वाले तुम। ऐसे-2 झाड़ वृद्धि को पाते रहते हैं। इस झाड़ को ही तूफान लगते हैं। परिपक्व अवस्था हो गई फिर तूफान की बात रहती नहीं। सभी बच्चों को सा॰ हो जावेगा। फर्क देखो कितना है। कितने मिस अण्डरस्टैंड भक्ति मार्ग में हो गये हैं, जो भगवान बैठ समझाते हैं। तो भी बुद्धि में नहीं बैठता है। शिवबाबा ने क्या आकर किया यह कोई को भी पता नहीं है। शिव के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है, जो चला आता है। यह है ड्रामा। कहा जाता है एकज भूल। जो गीता में नाम बदल दिया है, एकज भूल का नाटक कहा जाता है। बाप समझाते हैं तुमने भूल कर दी है। जिस आत्मा को राजयोग सिखाया, जो भविष्य देवता बनें, उनका नाम गीता में डाल दिया है। इस भूल को निर्णय कर बताया तो तुम्हारी विजय हो जावेगी। यह बड़ी हाईएस्ट भूल है। बाप सभी को कहते रहते हैं एकदम लिखो ऐसे। भारत की यह भूल के कारण इतनी गिरावट हुई है। बाप कहते हैं तुम मुझे कितना ठिक्कर-भित्तर में ले गये हो। यदा-यदा..... कह नहीं है। यह तो जो लिखा है उस पर बैठ समझाते हैं। करेक्ट करते हैं। आधा कल्प की भूलें हैं। तो वह जल्दी नहीं सुधरती हैं। समय चाहिए ना। इन बच्चों को भी ऐसे नहीं झट निश्चय हुआ है। इनको भी निश्चय होने में कि शिवबाबा की पधरामणी है कितना टाइम लगा है। बाप गुह्य-2 प्वाइंट्स सुनाते रहते हैं। आगे ज्ञान जो सुनाते थे इतना समझते नहीं थे। अभी प्वाइंट्स बहुत मिलती हैं, जिससे अच्छी रीति समझते हैं। दो बाप की थ्योरी पहले नहीं सुनाते थे। गुह्य-2 प्वाइंट्स जो निकलती रहती हैं, वह कोई सभी नहीं धारण कर सकते। सभी एक जैसे पढ़ नहीं सकते। नम्बरवार हैं। बाप रोज़-2 समझाते रहते हैं तो भी कितने थोड़े समझते हैं। गीता का भगवान कृष्ण नहीं। शिव है। निराकार को याद करने और और साकार को याद करने में बहुत फर्क है। यहाँ है यह नई बात, अपन को आत्मा समझ निराकार बाप को याद करना है। आत्मा का पक्का निश्चय होता नहीं, तो बाप का भी निश्चय नहीं होता। टाइम लगता है। मेहनत लगती है। अंत तक याद की यात्रा में रहना बड़ा मुश्किल है। नॉलेज में इतनी मेहनत नहीं लगती है, याद की यात्रा में ही मेहनत लगती है। बाबा समझाते हैं बाँधेली बाबा को बहुत ही याद करती हैं, कब बाबा से सम्मुख मिले। बाप भी बार-2 लिखते रहते हैं याद की यात्रा में रहना है। बाँधेलियाँ यहाँ वालों से भी ऊँच पद पाती हैं। लव रहता है। घर की गंगा का इतना मान नहीं देते। ज्ञान सागर को याद करते-2 तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप खत्म हो जाते हैं। बाप को जानना और बाप से बहुत लव रहना चाहिए। बाप जो बेहद की बादशाही देते हैं उनको कितना याद करना चाहिए। माया भी कम नहीं है, उनकी लड़ाई बहुत है। पिछाड़ी में आकर फुल फोर्स में प्यार रहता है। मिसाल भी है पतं(गे) कोई तो फिदा हो जाते हैं, कोई फेरी पहन चले जाते हैं। बच्चों को अंदर में खुशी रहनी चाहिए, हम बाप के बच्चे हैं। वर्ल्ड के प्रिंस बनते हैं। खुशी रहनी चाहिए ना; परंतु माया वह खुशी उड़ा देती है। इसको कहा जाता है माया से युद्ध। दुनिया नहीं जानती। इसको ही युद्ध का मैदान कहा जाता है। अपार खुशी होती है। हम अपार दुखों से निकल अपार सुखों में जाते हैं। काली देह से निकल क्षीर सागर में बच्चों को ले जाते हैं। सारी दुनिया काली देह है। इसमें तक्षक रहते हैं। बच्चों को समझना चाहिए, बाबा हमको काली देह से निकाल, क्षीर सागर में ले जाने आये हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।